Mikszáth Kálmán

A pénzügyminiszter reggelije

वित्त- मंत्री का नाश्ता

संसद की कैंटीन में केवल दो ही मेज़ों पर सफ़ेद मेज़पोश पड़े हैं। बाकी मेज़ें बिना मेज़पोशों के हैं, प्रजातान्त्रिक लोगों के लिए। इन मेज़ों पर काँच के बर्तन में पॉपरिका सीलोना रखा है। इतना भरा हुआ कि डांगा बेकन ही का नजर आ रहा है। काँच के बर्तन में पॉपरिका सीलोना अजीब विरोधाभास सा लगता है।

इन दो मेज़ों में से एक मेज़ का मेज़पोश दूसरी की तुलना में ज़्यादा सफ़ेद है। उस पर एक गिलास सौंफ से भरा रखा है, एक ख़ाली प्लेट है जिसमें हैम के स्लाइस चले आ रहे हैं, और एक छोटी प्लेट है जो ग़ज़ब की चॉकलेटों से लबालब भरी हुई है।

वहाँ एक सजी सजाई कुर्सी भी है, दूसरी कुर्सियों से कुछ हटकर रखी हुई; ताकि कोई दूसरा ग़लती से कहीं उस पर बैठ न जाए।

अंदर आने वाले चमचागण बड़ी श्रद्धा से उस मेज़ की ओर ताक रहे हैं, और यह दिखाते हुए कि वे सरकारी काम-काज के बारे में कितनी जानकारी रखते हैं, बड़ी इज़्ज़त से एक दूसरे के कान में फुसफुसा रहे हैं:

" वित्त - मंत्री साहब ने अभी तक नाश्ता नहीं किया", अब कुछ और चमचे भी अंदर आए हैं और वे भी मेज़ की ओर इशारा करके कह रहे हैं:

" यहाँ वित्त मंत्री साहब नाश्ता करेंगे।"

विश्ज़ोई साहब अंदर आए। यूँ ही वहाँ ख़ास मेज़ पर बैठ गए। कोहनियाँ ज़रा मेज़पोश पर टिकायी ही थीं कि बोतलें और गिलास खड़कने लगे, मानो कह रहे हों, " मंत्री जी कुछ ही क्षणों में यहाँ होंगे।"

विश्ज़ोई जी को भी अब तक इसका आभास हो गया था, फटाफट उठे और अपने आप से ही माफ़ी माँगते हुए बोले, " ओह! क्षमा करें, यहाँ तो मंत्री जी नाश्ता करेंगे।" उछल के खड़े हो गए और बराबर की मेज़ पर पहुँच गए। जहाँ न वैसा सफ़ेद मेज़पोश है और जहाँ भिन्न - भिन्न पार्टियों के सांसद अपनी अपनी पार्टी की गरिमा के अनुरूप मदिराओं का सेवन कर रहे हैं।

" ग़लती से उस मेज़ पर बैठ गया। कमबख़्त इस पास की नज़र कमज़ोर है।"

" दुखी न होइए साहब, नज़र को मत कोसिए," शासनारूढ़ पार्टी के एक व्यक्ति ने चुटकी ली, " आप अपने आसपास कुछ देख नहीं सकते इसीलिए तो आपको स्पीकर चुना गया है।"

" मैं कह रहा था, कि मैं गलती से वहाँ बैठ गया.... ।"

" हाँ - हाँ, जहाँ वित्त मंत्री नाश्ता करेंगे।"

" बेहया, कमबख्त ! देखा क्या बड़ा सिगार मुँह में लगाए रहता है," एक व्यक्ति की आवाज आई," इससे पहले का वित्त मंत्री छोटे सिगार से ही काम चलाता था।"

" जी हाँ, और हर रोज किसी न किसी द्वारा अपने को नाश्ते पर भी आमंत्रित करवा लेता था, ताकि उस पर भी सरकारी पैसा खर्च न हो।"

" अरे साहब, वो दुरदर्शक था ! महान दुरदर्शी ! अब ऐसे लोग कहाँ हैं। लद गया वो जमाना। अब तो भाई इन बड़े सिगार पीने वालों का युग है।"

" बड़ा सिगार !" व्यंग्यात्मक कटाक्ष करते हुए वामपंथी दल के एक सदस्य की आवाज आई," करदाताओं को मिलने चाहिएं बड़े सिगार और रने कर लेने वालों को जहर !"

" आपका यह प्रोग्राम है क्या ?"

" जी हाँ, हम उसी मुद्दे पर तो चुनकर आए थे।"

और अगले ही क्षण वित्त मंत्री ने प्रवेश किया। गहरा सन्नाटा छा गया। कालीन ने आने वाले की आहट को भी अपने में समेट लिया और बस एक कोमल स्वर उससे निकला," हुजूरे आला, नाश्ता करने के लिए तशरीफ ले आए हैं।"

मक्खियाँ जो दूध के लिए यहाँ आ गई थीं, शैतानी से चारों ओर मंडराने लगीं और एक दूसरे को बढ़ावा देते हुए बोलीं," आओ मंत्रीजी के साथ नाश्ता करें।"

चमचों के चेहरों पर प्यारी, इज्जत भरी मुस्कान उभर आई। वामपंथी लोगों के चेहरों से असंतोष गायब हो गया। सब तरफ चमक छा गई। किरने सी चमकने लगीं खिड़कियों पर, कैंटीन की अप्सरा ठेव की नीली आँखें असली बिजली गिराने लगीं, मक्खन पिघलने लगा, मछली और चाय तेज गंध फैलाने लगे। सब कुछ, जी हाँ, सब कुछ इतनी मस्ती से उछलने लगा क्योंकि आखिर वित्त मंत्री नाश्ता करेंगे।

महामहिम बैठे, उनके नीचे कुर्सी चरमराई जैसे अपना सलाम पेश कर रही हो। मंत्री जी के सामने हैम रखा गया — अफसोस कि जिंदगी दोबारा वापिस नहीं मिलती, वरना बेचारा यह सुअर भी अपनी खुशी को इस वक्त महसूस कर सकता !

मंत्री जी ने थोड़ा खाया और बड़े सलीके से छुरी और काँटा खास अन्दाज से एक दूसरे से टकराए। पहले कौर को थोड़ी शराब से सटक,

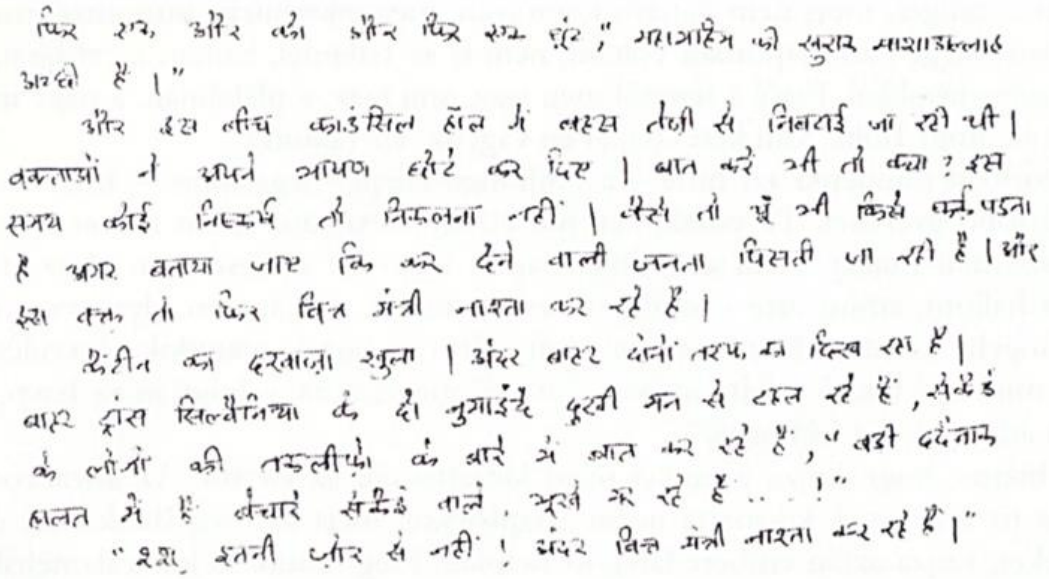

(Hindire fordította: Indu Mazaldan, India)

Pásztor Ferenc

Éljen Rákosi, a komám!

Többször emlegettem már Bulik Istvánnét, vagyis Lujzát, a komaasszonyomat. Az is megérdemel néhány mondatot, hogyan lettem én a komája. Közvetlenül a háború után, negyvenötben hozta világra Lujza (nekem akkoriban még Lujza néni) a tizenegyedik gyerekét. Egy kicsi lányka érkezett. Bajban volt a család, hiszen akkoriban alig volt itthon keresztapának való férfi, elvitték őket hősi halottnak, munkaszolgálatosnak, málenykij robotra, vagy a börtönbe a nyilaskodás miatt. Édesanyám kisegítette a sopánkodó Lujzát. Azt mondta neki: „ráse" (itt nem idézem pontosan) Lujza, a nagyobbik fiam már családfenntartó, elmúlt tizennégy éves, írasd be a tisztelendő úrral. Az úristen nem nézegeti a keresztapa jelöltek igazolványát.

Részletek a szerző salgótarjáni gyermekkorát és ifjúkorát felidéző, most megjelenő kötetéből.